रात्रि क्लास 7/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

रूहानी बच्चे बाप के सामने बैठे हैं। भल हैं जिस्म के साथ; परन्तु सभी जानते हैं हम बाप के सामने बैठे हैं। यह हमारा बेहद का बाप है। हर 5000 वर्ष बाद बाबा आप हमको पावन बनाकर पावन विश्व का मालिक बनाते हो। अब हमारा 84वाँ जन्म पूरा हुआ। अभी हम घर जावेंगे। तुम पार्ट बजाते-2 थक गए हो। अभी फिर बाबा आया हुआ है। सुखधाम वाया शान्तिधाम ले जावेंगे। बहुत सहज बात बाप बतलाते हैं। कलियुग माना ही दुखधाम। सतयुग है सुखधाम। अभी बाप आए हैं सुखधाम ले जाने और यह भी जानते हैं पवित्र बन कर जावेंगे। बाप भी है रूहानी। यह है स्प्रीचुअल रूहानी ज्ञान। बोलो– हमारा स्प्रीचुअल फादर है। स्प्रीचुअल चिल्ड्रेन्स का फादर एक ही बार आते हैं। यह संगम है कल्याणकारी युग। पुरुषोत्तम युग। यह भारत में ही होता है। यहाँ ही गाया जाता है। पुरुष को उत्तम बनाना है। अभी है कनिष्ट। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट। उत्तम सतयुग, मध्य द्वापर, कनिष्ट कलियुग। यह सभी बातें बाप सुनाते हैं तो नोट करना चाहिए। उत्तम सतयुग, मध्यम द्वापर, कनिष्ट कलियुग। आदि-मध्य-अन्त, फिर कनिष्ट से उत्तम बनेंगे। पुरुषोत्तम। नर और नारी दोनों ही उत्तम बनते हैं। फिर गिरते हैं तो दोनों गिरते हैं। बाप नई-2 बातें सुनाते हैं। ज्ञान सिर्फ बाप ही आकर देते हैं। उनको रूहानी ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। ज्ञान तब मिलता है जब मनुष्य अज्ञान अंधेरे में हैं। कितनी सहज बातें हैं। ब्राह्मणियों का काम है रोज़-2 प्वाइंट्स बताना। इस संगमयुग को बहुत महत्व दिया जाता है। स्प्रीचुअल नॉलेज सिर्फ स्प्रीचुअल फादर ही देते हैं। हम हैं स्प्रीचुअल चिल्ड्रेन्स। स्प्रीचुअल फादर हमको स्प्रीचुअल नॉलेज देते हैं। सतोप्रधान बनने की युक्ति बताते हैं। पहले-2 यह शिक्षा देनी है तुम आत्मा हो। आत्माओं का बाप है शिवबाबा। वह सदा पवित्र हैं। आत्माएँ पवित्र-अपवित्र बनती हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आती हैं। गोल्डन एज, सिलवर एज..... इस समय है आयरन एज्ड। दुनिया को ही कहा जाता है। जैसा सोना वैसा जेवर बनता है। खाद डालने से ही ऐसी चीज़ बनती है। माया की प्रवेशता होती है। फिर बाप आते हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इनको कुम्भ का मेला कहा जाता है। तुम बच्चों को अभी सभी मालूम हुआ। आगे कुछ नहीं जानते थे। बन्दर बुद्धि थे। फिर संगम पर बाप (ने) आकर मनुष्य बुद्धि बनाया है जब तुम ब्राह्मण बने हो। फिर तुम मनुष्य को देवता बनाते हो। तुम पढ़कर देवता बनते हो। कितना सहज है। यह पक्का समझना है। स्प्रीचुअल नॉलेज स्प्रीचुअल फादर में ही होता है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को वही जानते हैं। नेती-2 कह देते। मनुष्य होकर ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को न जाने तो वह क्या काम का। तुमको समझाया है हरेक आत्मा को पार्ट मिला हुआ है। आत्मा कितनी छोटी है उनमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। आत्मा भी वण्डर, तो आत्माओं का बाप भी वण्डर है। सारी सृष्टि कैसे वृद्धि को पाती है, वह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। जो अन्दर-बाहर साफदिल होंगे उनका तीर अच्छा लगेगा। सभी ऐसे नहीं होते हैं। बाबा कभी नहीं कहेंगे उनका अन्दर-बाहर साफ है; परन्तु बाबा सामने नहीं कहेंगे। बिगड़ेंगे तो डिस-सर्विस कर देंगे।

बाप को बहुत-बहुत प्यार करना है। दिलवाला मंदिर है ना। सभी की दिल लेने वाला। यह भी साथ में हैं। बाप दादा दोनों दिल लेते हैं। तुमको जो मशीन मिलती है श्रृंगारने लिए। वह सरस्वती थी। यह ब्रह्मपुत्री। बड़ा कौन? ब्रह्मपुत्रा में बड़े-2 स्टीमर्स आते हैं। इनका संगम पर बहुत मेला लगता है। तो यह बड़ी ते बड़ी नदी है। यह है सर्व की सद्गति करने वाले शिवबाबा का स्थान। सर्व तीर्थों में महान तीर्थ है आबू। थोड़े ही समय में आबू का बहुत नाम हो जावेगा। सभी धर्मों का तीर्थ है; क्योंकि सभी की सद्गति होती है। अखबारों आदि में आवाज़ होगा। अभी आबू का इतना ना(म) नहीं है। अम्बा पर कितने जाते हैं। यहाँ तो फिर बाबा और मम्मा दोनों हैं। अम्बा पर बहुत (मेला) लगते हैं। ल॰ पर मेले नहीं लगते। ल॰ को तिजोरी में रखते हैं। समझते हैं धन वृद्धि को पावेगी। दीपमाला पर सफाई आदि से मंदिर में जावेंगे, पैसा मांगेंगे। बाप के पास आकर बच्चे तृप्त हुए? आत्मा 21 जन्म लिए तृप्त हो जाती है। सतयुग में सदैव तृप्त आत्मा रहते हो। अच्छा, गुडनाइट। नमस्ते।